शिक्षण और सीखने की अवधारणा और दोनों के मध्य सम्बन्ध

Teaching and Learning: Concepts and Relationship between the two

डॉ. राम किशोर

सहायक आचार्य (योग)

स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज,

छत्रपति शाहू जी महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर

शिक्षण और सीखने की अवधारणा

Concept of Teaching and Learning

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिननस्तत्त्वदर्शिनः।।
गीता 4/34

अर्थात् उस ज्ञान को तूझे तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझना चाहिए। उनको भली–भांति दंडवत प्रणाम करके उनकी सेवा करने और कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न पूछने पर वह परमाणु तत्व को भलीभांति जानने वाले ज्ञानी जन तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश करेंगे गीता के उपरोक्त श्लोक में विद्यार्थी और गुरु के संबंध को स्पष्ट किया गया है। गुरु के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करें इस बात को स्पष्ट किया गया है। उपरोक्त इस लोक से तीन बातें स्पष्ट हो रही हैं वन विभाग दंडवत प्रणाम तू सहज भाव से प्रश्न 3 सेवा शिष्य को गुरु के सानिध्य निकटता या गुरु कृपा से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है और इस निकटता को दृढ़ करने के लिए सिर्फ को गुरु के प्रति उपरोक्त तीनों कार्यों को करना चाहिए इनसे गुरु निकटता और ज्ञान की प्राप्ति होती है

धन्यवाद

Thanks